12 अशोक वाजपेयी

अशोक वाजपेयी का जन्म 16 जनवरी, सन् 1941 को दुर्ग (मध्य प्रदेश) में हुआ था। इन्होंने सागर विश्वविद्यालय से बी0 ए0 तदन्तर सेंट स्टीवेंस कॉलेज, दिल्ली से अंग्रेजी साहित्य में एम0 ए0 उत्तीर्ण किया। लोक सेवक के रूप में इन्होंने कला के उत्थान में अभूतपूर्व योगदान दिया है। अशोक वाजपेयी समकालीन हिन्दी साहित्य के एक प्रमुख साहित्यकार हैं। इनकी रचनात्मक क्षमता बहुआयामी है। आधुनिक कवि, आलोचक, संपादक और संस्कृतिकर्मी के रूप में आपकी बड़ी ख्याति है। आपने 'समवेत', 'पहचान', 'पूर्वाग्रह', 'समास' और 'बहुवचन' आदि पत्रिकाओं का संपादन कार्य किया तथा कुमार गंधर्व, निर्मल वर्मा सृजनात्मक आलोचना आदि का संचयन, मुक्तिबोध और शमशेर बहादुर सिंह की चुनी हुई कविताओं का संपादन कार्य भी किया। 1994 ई0 में काव्य संग्रह 'कहीं नहीं वहीं' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। इसके अतिरिक्त इन्हें 'दयावती कवि शेखर सम्मान' और 'कबीर सम्मान' से भी सम्मानित किया गया है। इन्हें पोलैण्ड के राष्ट्रपति द्वारा 'द ऑफिसर्स क्रॉस ऑफ मेरिट ऑफ द रिपब्लिक ऑफ पोलैण्ड' तथा फ्रांसीसी सरकार द्वारा 'ऑफिसर डी.एल. आर्डर डेस आर्ट्स एट डेस लेटर्स' पुरस्कारों द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। वाजपेयी जी ने मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में 'भारत भवन' की स्थापना में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है।

कवि-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**–16 जनवरी, सन् 1941 ई0।
- **जन्म-स्थान**–दुर्ग (म0 प्र0)।
- **शिक्षा**–सागर विश्वविद्यालय से बी0ए0 एवं सेंट स्टीवेंस कॉलेज दिल्ली से अंग्रेजी में एम0ए0।
- **रचनाएँ**–शहर अब भी सम्भावना है, एक पतंग अनंत में, अगर इतने से, तत्पुरुष आदि।
- **सम्मान**–साहित्य अकादमी 1994 एवं दयावती मोदी कवि शिखर सम्मान।

अशोक वाजपेयी की अब तक स्वलिखित और सम्पादित 33 कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें शहर अब भी सम्भावना है (1966), एक पतंग अनन्त में (1984), अगर इतने से (1986), तत्पुरुष (1989), कहीं नहीं वहीं (1991), बहुरि अकेला (1992), थोड़ी-सी जगह (1994), घास में दुबका आकाश (1994), आविन्यो (1995), जो नहीं है (1996), अभी कुछ और (1998) और समग्र कविताओं का संचयन 'तिनका-तिनका' दो खण्डों में (1996) प्रकाशित कृतियाँ हैं। कविता के अलावा आलोचना की 'फिलहाल' (1979), कुछ पूर्वग्रह (1984), समय से बाहर (1994), सीढ़ियाँ शुरू हो गयी हैं (1996), कविता का गल्प (1996), कवि कह गया है (1998) कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं।

तीसरा साक्ष्य (1979), साहित्य विनोद (1984), कला विनोद (1986), पुनर्वसु (1989), कविता का जनपद (1993) के अलावा गजानन माधव मुक्तिबोध, शमशेर और अज्ञेय की चुनी हुई कविताओं का सम्पादन इन्होंने किया। उन्होंने कुमार गन्धर्व, निर्मल वर्मा, जैनेन्द्र कुमार, हजारीप्रसाद द्विवेदी और अज्ञेय पर भी पुस्तकें सम्पादित किया हैं।

साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में भी अशोक वाजपेयी का उल्लेखनीय योगदान है। समवेत (1958-59), पहचान (1970-74), पूर्वग्रह (1974-1990), बहुवचन (1990), कविता एशिया (1990), समास (1992) आदि इनके साहित्यिक पत्रकारिता की पहचान के स्तम्भ हैं। इसके अतिरिक्त 'द बुक रिव्यू' समेत अनेक पत्रिकाओं के सलाहकार सम्पादक रहे।

अशोक वाजपेयी समग्र जीवन की उच्छल अनुगूंजों के कवि हैं। उन्हें समय-बिद्ध कवि कहने के बजाय कालबिद्ध कवि कहना ज्यादा उपयुक्त है। उनका समग्रबोध भौतिक, सामाजिक और साधारण जीवन की ही कथा है। अशोक वाजपेयी की काव्यानुभूति की बनावट में सच्ची, खरी और एक सजग आधुनिक भारतीय मनुष्य की संवेदना का योग है, जिसमें परम्परा का पुनरीक्षण और आधुनिकता की खोज दोनों साथ-साथ है। वशिष्ठ मुनि ओझा के अनुसार, ''आजादी के इन साठ वर्षों की कविता का इतिहास जब लिखा जायगा तो अशोक वाजपेयी उन थोड़े से हिन्दी कवियों में एक होंगे जिनकी कविता की रूह में भारतीयता की एक गहरी छाप मौजूद होगी, जहाँ आपको कविता की परम्परा का सूक्ष्म पुनरीक्षण, काव्यभाषा की परम्परा का अपने समय में अचूक प्रयोग, अपनी संस्कृति, कला और सभ्यता के प्रति एक सजग अनुराग और समर्पण की आस्था मौजूद मिलेगी।''

अशोक वाजपेयी अपनी कविता में हमेशा विनम्र, प्रेम-पिपासु, उत्सुक, अन्वेषी मनुष्य लगते हैं, जिसे इस जीवन जगत् से गहरा प्रेम है। वे समकालीन काव्यशास्त्र की बनी-बनायी रूढ़ियों के प्रचलित रास्तों को छोड़कर अपनी राह पर चलनेवाले निर्भय कवि हैं।

●●

(1) युवा जंगल

एक युवा जंगल मुझे,
अपनी हरी उँगलियों से बुलाता है।
मेरी शिराओं में हरा रक्त बहने लगा है।
आँखों में हरी परछाइयाँ फिसलती हैं
कन्धों पर एक हरा आकाश ठहरा है
होंठ मेरे एक हरे गान में काँपते हैं–

मैं नहीं हूँ और कुछ
बस एक हरा पेड़ हूँ
–हरी पत्तियों की एक दीप्त रचना।

ओ जंगल युवा,
बुलाते हो
आता हूँ
एक हरे वसन्त में डूबा हुआ
आऽताऽ हूँ....।

(2) भाषा एकमात्र अनन्त है

फूल झरता है
फूल शब्द नहीं!

बच्चा गेंद उछालता है,
सदियों के पार
लोकती है उसे एक बच्ची!

बूढ़ा गाता है एक पद्य,
दुहराता है दूसरा बूढ़ा,
भूगोल और इतिहास से परे
किसी दालान में बैठा हुआ!

न बच्चा रहेगा,
न बूढ़ा,
न गेंद, न फूल, न दालान
रहेंगे फिर भी शब्द
भाषा एकमात्र अनन्त है।

|| अभ्यास प्रश्न ||

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए तथा काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—

(क) एक युवा ..... काँपते हैं।

(ख) मैं नहीं ..... रचना।

(ग) ओ जंगल .....आऽताऽ हूँ...।

(घ) फूल झरता .....बच्ची!।

(ङ) बूढ़ा .....बैठा हुआ।

(च) न बच्चा ..... अनन्त है।

2. अशोक वाजपेयी का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए। **(2016CE,20MC,MG)**

3. अशोक वाजपेयी की भाषा-शैली एवं साहित्यिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

4. अशोक वाजपेयी की जीवनी एवं रचनाएँ लिखिए तथा उनका काव्यगत सौन्दर्य भी लिखिए।

5. अशोक वाजपेयी के साहित्यिक अवदान एवं भाषागत विशिष्टताओं पर प्रकाश डालिए।

6. अशोक वाजपेयी का जीवन-परिचय एवं काव्यगत विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

7. 'युवा जंगल' कविता में कवि ने पाठक के मन में किस भाव को जागृत करना चाहा है?

8. 'युवा जंगल' कविता का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।

9. 'भाषा एकमात्र अनन्त है' कविता का सारांश लिखिए।

10. 'भाषा एकमात्र अनन्त है' शीर्षक कविता में कवि ने क्या सन्देश दिया है?

➥ आन्तरिक मूल्यांकन

अशोक वाजपेयी का जीवन-परिचय तालिका के माध्यम से दर्शाइए।

टिप्पणी

➨ युवा जंगल

युवा = जवान। **शिराओं** = नाड़ियों। **हरा रक्त** = हरे रंग का खून। **परछाइयाँ** = छाया। **सदियों** = शताब्दियों। **ठहरा** = रुका हुआ। **काँपते** = हिलते। **दीप्त** = प्रकाशवान, आलोकित, उत्तेजित।

➨ भाषा एकमात्र अनन्त है

झरता = गिरता। **उछालता** = ऊपर फेंकता। **सदियों** = शताब्दियों। **लोकती** = पकड़ लेती। **पद्य** = कविता, गीत। **परे** = दूर। **अनन्त** = जिसका कोई अन्त न हो।

●●